REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331 (UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 7 | APRIL - 2018

महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण का महत्त्व

डॉ. नरेन्द्र सिंह
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), सी.आर.एम.जाट महाविद्यालय , हिसार .

शोध – आलेख – सार

'सशक्तिकरण' से तात्पर्य किसी व्यक्ति की उस क्षमता से है जिससे उसमें ये योग्यता आ जाती है। सिजमें वो अपने जीवन से जुड़े सभी निर्णय स्वयं ले सके। महिला सशक्तिकरण में भी हम उसी क्षमता की बात कर रहे हैं जहाँ महिलाएँ परिवार और समाज के सभी बंधनों से मुक्त होकर अपने निर्णयों की निर्माता खुद बने। महिलाओं को अधिकार देना ही महिला सशक्तिकरण है। देश, समाज और परिवार के उज्जवल भविष्य के लिए महिला सशक्तिकरण बेहद जरूरी है।

नरेन्द्र मोदी जी द्वारा महिला दिवस पर कहा गया मशहूर वाक्य ''देश की तरक्की के लिये पहले हमें भारत की महिलाओं को सशक्त बनाना होगा।''[2] एक बार जब महिला अपने कदम उठा लेती है, तो परिवार आगे बढ़ता है गांव आगे बढ़ता है और राष्ट्र विकास की ओर आगे बढ़ता है।

आज की महिलाओं का काम केवल घर–गृहस्थी संभालने तक ही सीमित नहीं है, वे अपनी उपस्थिति हर क्षेत्र में दर्ज करा रही है। बिजनेस हो या परिवार महिलाओं ने साबित कर दिया है कि वे हर वह काम करके दिखा सकती है जो पुरूष समझते है कि वहां केवल उनका ही वर्चस्व है, अधिकार है।[3] महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा तथा प्रशिक्षण का भी अपना ही महत्व है। शिक्षा आज के प्रत्येक कार्य के लिए महत्वपूर्ण है। प्राचीन समय में महिलाएं शिक्षा से वंछित रही परन्तु जैसे ही उन्हें शिक्षा मिली, उनकी समझ में, सोच में वृद्धि हुई। खुद को आत्मनिर्भर बनाने की इच्छा उत्पन्न हुई। शिक्षा मिल जाने से महिलाओं ने अपने पर विश्वास करना सीखा और घर के बाहर की दुनिया को जीत लेने का सपना बुना लिया।

कहा जाता है कि माँ अपनी संतान की प्रथम शिक्षा होती है परन्तु फिर भी पुराने समय से महिलाओं की शिक्षा को विशेष महत्व नहीं दिया जाता था। कुछ क्षेत्रों में आज भी महिलाओं की शिक्षा को लेकर बहुत अधिक परिवर्तन नहीं हुए है। और यह वास्तविकता में चिंता का विषय है। यदि हमारे प्राचीन धर्मग्रन्थों को माना जाए तो स्वय देवाधि देव महादेव ने माता पार्वती को अपने समान शाक्तिशाली तथा अपना ही आधा अंग बताया है।

कुछ कुबुद्धिजीवी अपने ही धर्मग्रंथों का गलत अर्थ निकालते हुए एक तर्क प्रस्तुत करते है कि यदि महिलाओं को पुरूषों के समान ही अधिकार प्राप्त थे तो माता लक्ष्मी सदैव भगवान विष्णु के पैरों की ओर ही क्यूं बैठती है तथा उनकी सेवा क्यूं करती रहती है? मित्रो ये महिलाओं की कमजोरी नहीं बल्कि महिलाओं के सेवा भाव तथा अपने पति को ही परमेश्वर मानने की सोच को दर्शाता है इसका अर्थ यह कभी भी नहीं कि एक महिला जो आपको अपना स्वामी मानती है उसे आप बस अपने चरणों और उपभोग मात्र ही सीमित कर दे। यदि ऐसा ही होता तो भक्तिलाल में मीराबाई का नाम हम कभी नहीं सुन पाते, और ना ही कभी रानी लक्ष्मीबाई की शौर्यगाथा अपने बच्चों को सुना पाते।

मीराबाई से लेकर इंदिरा गांधी, सरोजनी, महादेवी वर्मा, कल्पना चावला, सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल आदि नाम महिला सशक्तिकरण के प्रत्यक्ष प्रमाण है।[3]

स्वयं नेपोलियन ने कहा था ''आप मुझे एक योग्य माता दे दो मैं आपको एक योग्य राष्ट्र दे दूँगा।'' यह कथन समाज में महिला के महत्व को दर्शाता है। यदि आप एक पुरूष को शिक्षित बनाते है तो आप मात्र एक

उसे ही शिक्षित बनाते हैं परंतु यदि आप एक महिला को शिक्षित बनाते है तो आप एक पुरे परिवार को शिक्षित बनाते हैं।[4]

यदि एक माँ ही शिक्षित नहीं होगी तो वह अपने बच्चों को शिक्षा का महत्व समझाकर शिक्षा की प्रेरणा कैसे देगी?

वर्तमान समय में महिला पुनः अपने उस सम्मान को प्राप्त करने को दिन प्रतिदिन संघर्षरत है जो उसे सदियों पहले प्राप्त हो जाना चाहिए था।

निष्कर्ष :–

शिक्षा, प्रौधोगिकी, विज्ञान, व्यापार, लेखन, राजनीति, सेना, खेलकूद आदि हर क्षेत्र में महिलाएं अपनी दक्षता का प्रदर्शन कर पुरूषों से कड़ी प्रतिस्पर्धा कर रही है और देर से ही सही परंतु एक सशक्त समाज की नींव पड़ चुकी है और एक उज्जवल भविष्य हमारी प्रतीक्षा कर रहा है। क्योंकि ''महिलाएँ प्रकाश की किरण बन समाज को उज्जवल करने हेतु, आगे बढ़ रही है।'' इन्हें रोके नहीं बढ़ने दें।

शिक्षित महिला ही हमारे स्वच्छ और उज्जवल भविष्य का आधार है।

संदर्भ ग्रंथ –

1. इन्टर नैट
2. नरेन्द्र मोदी अभिभाषण– दैनिक जागरण
3. नारी शक्ति व सशक्त भारत– मासिक पत्रिका
4. नेपोलियन कथन

डॉ. नरेन्द्र सिंह
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), सी.आर.एम.जाट महाविद्यालय ,हिसार .